BAL BHARATI PUBLIC SCHOOL, PITAMPURA, DELHI – 110034

SUBJECT:- SANSKRIT

पाठ - बुद्धिर्बलवती सदा (हमेशा बुद्धि बलवती होती है)

निर्देश - • पाठ को तीन अनुच्छेदों में विभक्त किया गया है। पहले अनुच्छेद, फिर उसका सरलार्थ तथा उस गद्यांश पर आधारित प्रश्न दिए गए हैं।

• प्रश्नों के उत्तर संस्कृत कॉपी में लिखें।

1 अस्ति देउलाख्यो ग्रामः। तत्र राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसति स्म। एकदा केनापि आवश्यककार्येण तस्य भार्या बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता। मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श। सा व्याघ्रमागच्छन्तं दृष्ट्वा धाष्टर्यात् पुत्रौ चपेटया प्रहृत्य जगाद - "कथमेकैकशो व्याघ्रभक्षणाय कलहं कुरुथः। अयमेकस्तावद्विभज्य भुज्यताम्। पश्चाद् अन्यो द्वितीयः कश्चिल्लक्ष्यते।

सरलार्थ:- 'देउल' नाम का गाँव था। वहाँ राजसिंह नामक राजपुत्र रहता था। एक दिन किसी आवश्यक काम से उसकी पत्नी बुद्धिमती दोनों पुत्रों के साथ पिता के घर की ओर चल पड़ी। रास्ते में घने जंगल में उसने एक बाघ को देखा। उसने बाघ को आते हुए देखकर धृष्टता से दोनों पुत्रों को एक-एक थप्पड़ मारकर कहा - "एक-एक बाघ को खाने के लिए (तुम दोनों) कैसे झगड़ा कर रहे हो। यह एक है, तो बाँटकर खा लो। बाद में कोई दूसरा ढूँढा जाएगा।"

अभ्यास - एकपदेन उत्तरत

(i) देउलाख्ये ग्रामे किं नाम राजपुत्रः वसति स्म?

(ii) राजसिंहस्य भार्या कुत्र चलिता?

पूर्णवाक्येन उत्तरत

(1) बुद्धिमती पुत्रौ किं जगाद?

(2) मार्गे गहनकानने बुद्धिमती कं ददर्श?

भाषिक - कार्यम्

(1) 'जगाद' क्रियापदस्य कर्तृपदं किमस्ति? (क) सा (ख) पुत्रौ (ग) भार्या

(2) 'वने' पदस्य पर्यायपदं किमत्र प्रयुक्तम्? (क) मार्गे (ख) कानने (ग) अन्यो

(3) 'सा' सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम्? (क) व्याघ्राय (ख) राजपुत्राय (ग) भार्यायै

(4) 'अयम्' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्? (क) राजपुत्राय (ख) व्याघ्राय (ग) राजसिंहाय

BBPS, PITAMPURA

2 इति श्रुत्वा व्याघ्रमारी कोचिदियमिति मत्वा व्याघ्रो भयाकुलचित्तो नष्टः।

निजबुद्ध्या विमुक्ता सा भयात् व्याघ्रस्य भामिनी।
अन्योऽपि बुद्धिमांल्लोके मुच्यते महतो भयात् ॥1॥

भयाकुलं व्याघ्रं दृष्ट्वा कश्चिद् धूर्तः शृगालः हसन्नाह - "भवान् कुतः भयात् पलायितः?"

व्याघ्रः - गच्छ, गच्छ जम्बुक! त्वमपि किञ्चिद् गूढप्रदेशम्। यतो व्याघ्रमारीति या शास्त्रे श्रूयते तयाहं हन्तुमारब्धः परं गृहीतकरजीवितो नष्टः शीघ्रं तदगतः।

शृगालः - व्याघ्र! त्वया महत्कौतुकम् आवेदितं यन्मानुषादपि बिभेषि?

व्याघ्रः - प्रत्यक्षमेव मया सात्मपुत्रावेकैकशो मामत्तुं कलहायमानौ चपेटया प्रहरन्ती दृष्टा।

सरलार्थः - यह सुनकर कि यह कोई व्याघ्र को मारने वाली है, ऐसा समझकर वह बाघ डर से व्याकुल होकर भाग गया।
"वह स्त्री बाघ के भय से अपनी बुद्धि से छूट गई।
अन्य बुद्धिमान भी संसार में महान भय से छूट जाता है।"
डरे हुए बाघ को देखकर कोई धूर्त गीदड़ हँसते हुए बोला आप कहाँ से डरकर भाग रहे हो?

बाघ - जाओ, जाओ गीदड़! तुम भी किसी गुप्त स्थान पर (छुप जाओ)। क्योंकि जो व्याघ्रमारी शास्त्र में सुनी गई है, उसने मुझे मारना शुरू कर दिया है, पर प्राण हथेली पर रखकर (मैं) उसके आगे से भाग आया।

गीदड़ - बाघ! तुमने बहुत आश्चर्यजनक बात बताई कि (तुम) मनुष्य से भी डरते हो।

बाघ - मेरे सामने भी अपने दोनों पुत्रों को एक-एक करके मुझे खाने के लिए लड़ते हुए दोनों को थप्पड़ मारती हुई वह देखी गई।

अभ्यास - एकपदेन उत्तरत

(i) कीदृशः व्याघ्रः नष्टः?
(ii) सा भामिनी कथं व्याघ्रस्य भयात् विमुक्ता?

पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) धूर्तः शृगालः कं दृष्ट्वा हसन्नाह?
(ii) व्याघ्रः जम्बुकं किमवदत्?

भाषिक - कार्यम्

BRBS, PITAMPURA

(i) 'जम्बुकः' पदस्य पर्यायपदं किमत्र प्रयुक्तम्? (क) शृगालः (ख) व्याघ्रः (ग) बुद्धिमान्
(ii) 'शृगालः' पदस्य विशेषणपदं चिनुत। (क) नष्टः (ख) धूर्तः (ग) भयाकुलं
(iii) 'आह' क्रियापदस्य कर्तृपदं किमस्ति? (क) धूर्तः (ख) शृगालः (ग) व्याघ्रः
(iv) 'मूर्खः' पदस्य विपर्ययपदं चिनुत। (क) कौतुकम् (ख) मानुषात् (ग) बुद्धिमान्

3. जम्बुकः - स्वामिन्! यत्रास्ते सा धूर्ता तत्र गम्यताम्। तव पुनः तत्र गतस्य सा सम्मुखमपीक्षते यदि, तर्हि त्वया अहं हन्तव्यः इति।
व्याघ्रः - शृगाल! यदि त्वं मां मुक्त्वा यासि तदा वेलाप्यवेला स्यात्।
जम्बुकः - यदि एवं, तर्हि मां निजगले बद्ध्वा चल।
सः व्याघ्रः तथा कृत्वा काननं ययौ। शृगालेन सहितं पुनरायान्तं व्याघ्रं दूरात् दृष्ट्वा बुद्धिमती अचिन्तयत् "जम्बुककृतोत्साहाद् व्याघ्रात् कथं मुच्यताम्?" परं प्रत्युत्पन्नमतिः सा जम्बुकमाक्षिपन्त्यङ्गुल्या तर्जयन्त्युवाच -
"रे रे धूर्त त्वया दत्तं मह्यं व्याघ्रत्रयं पुरा।
विश्वास्याद्यैकमानीय कथं यासि वदाधुना॥2"
इत्युक्त्वा धाविता तूर्णं व्याघ्रमारी भयङ्करा।
व्याघ्रोऽपि सहसा नष्टः गलबद्धशृगालकः॥3॥
एवं प्रकारेण बुद्धिमती व्याघ्रजाद् भयात् पुनरपि मुक्ताऽभवत्। अत एव उच्यते - "बुद्धिर्बलवती तन्वि सर्वकार्येषु सर्वदा।"

सरलार्थः - गीदड़ - स्वामी! जहाँ वह धूर्त स्त्री है, वहाँ जाना चाहिए। तुम्हारे फिर से वहाँ गए हुए के सामने यदि वह देखेगी, तो तुम मुझे मार देना।
बाघ - गीदड़! यदि तुम मुझे छोड़कर जाओगे, तो शर्त भी बिना शर्त वाली हो जाएगी।
गीदड़ - यदि ऐसा है, तो मुझे अपने गले में बाँधकर ले चलो।
वह बाघ वैसा करके वन को चल पड़ा। गीदड़ के साथ फिर आते हुए बाघ को देखकर बुद्धिमती ने सोचा- "गीदड़ के द्वारा उत्साहित किए गए बाघ से कैसे छुटा जाए? पर जल्दी से सोचने वाली स्त्री उसने गीदड़ की तरफ अंगुली से धमकाते हुए कहा-
"अरे धूर्त! पहले तुमने मुझे तीन बाघ दिए थे, आज विश्वास दिलाकर एक को लेकर कैसे आया, अब बता।"2॥

ऐसा कहकर वह भय उत्पन्न करने वाली व्याघ्रमारी शीघ्र भाग गई। गले में बँधे हुए गीदड़ वाला बाघ भी अचानक भाग गया।

इस प्रकार बुद्धिमती व्याघ्र से उत्पन्न भय से पुनः मुक्त हो गई। इसलिए कहा गया है - "हमेशा सब कामों में बुद्धि बलवती होती है।"

अभ्यास - एकपदेन उत्तरत

(i) व्याघ्रजम्बुकौ कुत्र ययौ ? (ii) व्याघ्रः जम्बुकं कुत्र बद्ध्वा अचलत् ?

पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(i) बुद्धिमती किम् चिन्तितवती ? (ii) बुद्धिमती कस्मात् मुक्ताऽभवत् ?

भाषिक कार्यम् -

(i) 'प्रत्युत्पन्नमतिः' विशेषणपदं कस्यै प्रयुक्तम् ? (क) व्याघ्राय (ख) जम्बुकाय (ग) भार्यायै

(ii) 'ययौ' क्रियापदस्य कर्तृपदं किमस्ति ? (क) शृगालः (ख) जम्बुकः (ग) व्याघ्रः

(iii) 'वेला' पदस्य विपर्ययपदं चिनुत। (क) वेलाप्यवेला (ख) अवेला (ग) धूर्ता

(iv) 'व्याघ्रमारी' पदस्य विशेषणपदं किमस्ति। (क) भयङ्करा (ख) धाविता (ग) तूर्णं

* शृगालः/जम्बुकः का अर्थ गीदड़, सियार कुछ भी लिया जा सकता है।

पाठ के सन्धियुक्त पद एवं उनका सन्धिच्छेद -

अनुच्छेद 1

- देउलाख्यो ग्रामः - देउल + आख्यः + ग्रामः
- केनापि - केन + अपि
- पितुर्गृहं - पितुः + गृहं
- पुत्रद्वयोपेता - पुत्रद्वय + उपेता
- अयमेकस्तावद्विभज्य - अयम् + एकः + तावत् + विभज्य
- कश्चिल्लक्ष्यते - कश्चित् + लक्ष्यते
- अन्यो द्वितीयः - अन्यः + द्वितीयः

अनुच्छेद 2

- काचिदियमिति - काचित् + इयम् + इति
- व्याघ्रो भयाकुलचित्तो नष्टः - व्याघ्रः + भय + आकुलचित्तः
- अन्योऽपि - अन्यः + अपि
- बुद्धिमाँल्लोके - बुद्धिमान् + लोके
- कश्चिद् धूर्तः - कश्चित् + धूर्तः
- यतो व्याघ्रमारीति - यतः + व्याघ्रमारी + इति
- तथाहं - तथा + अहं
- तदग्रतः - तत् + अग्रतः
- यन्मानुषादपि - यत् + मानुषात् + अपि
- सात्मपुत्रावेकैकशो - सा + आत्मपुत्रौ + एक + एकशः

अनुच्छेद 3

- यत्रास्ते - यत्र + आस्ते
- वेलाप्यवेला - वेला + अपि + अवेला
- पुनरायान्तं - पुनः + आयान्तं
- तर्जयन्त्युवाच - तर्जयन्ति + उवाच
- विश्वास्याद्यैकमानीय - विश्वास्य + अद्य + एकम् + आनीय
- वदाधुना - वद + अधुना
- इत्युक्त्वा - इति + उक्त्वा
- व्याघ्रोऽपि - व्याघ्रः + अपि
- पुनरपि - पुनः + अपि
- बुद्धिर्बलवती - बुद्धिः + बलवती

— x —

SBPS, PITAMPURA